Dr. Vandana Suman
Associate professor
Dept. of Philosophy
H. D. Jain College, Ara
M. A semester - 1 Philosophy CC-04
Indian and western Ethics

" Ayer: Emotivism " (संवेगवाद) 1.

2020 FEBRUARY FRIDAY 14

संवेगवाद के अनुसार नैतिक शब्द "संवेगात्मक" (Emotive) होते हैं। संवेगवाद का विकास 'तार्किक प्रत्यक्षवाद' का परिणाम है। इसके प्रमुख दार्शनिक मारिट्ज श्लिक, कार्नेप, ए. जे. एयर आदि हैं। एयर के अनुसार "नैतिक निर्णय केवल संवेगात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं।" तार्किक प्रत्यक्षवादियों के अनुसार केवल अनुभवात्मक (संश्लेषणात्मक) एवं विश्लेषणात्मक वाक्य ही सार्थक होते हैं, अन्य सभी वाक्य निरर्थक हैं। कार्नेप, एयर तथा स्टीवेन्सन संवेगवाद के प्रमुख समर्थक माने जाते हैं। संवेगवादियों के अनुसार नैतिक निर्णय तथ्यात्मक निर्णयों की भाँति सत्य या असत्य नहीं होते और शब्दों की परिभाषा पर आधारित न होने के कारण ये निर्णय गणित एवं तर्क-शास्त्र के वाक्यों की भाँति विश्लेषणात्मक भी नहीं होते। यही कारण है कि कार्नेप तथा एयर नैतिक निर्णयों को उस अर्थ में सार्थक नहीं मानते, जिस अर्थ में अनुभवात्मक वाक्य और विश्लेषणात्मक वाक्य सार्थक होते हैं। एयर, जो तार्किक प्रत्यक्षवाद के प्रबल समर्थक रहे हैं, कहते हैं कि नैतिक वाक्य वर्णन नहीं,

वरन भावनाओं या संवेगों की अभिव्यक्ति मात्र है। भावनाओं की अभिव्यक्ति केवल शारीरिक मुद्राओं या व्यवहारों के द्वारा ही नहीं, वरन शब्दों एवं वाक्यों के प्रयोगों के द्वारा भी होती है। जब कोई कहता है कि "चोरी गलत है" तब वह चोरी के संबंध में अपनी घृणा या अपनी नापसंदगी ही जाहिर कर रहा होता है। मानसिक स्थिति का वर्णन करना एक बात है और मानसिक स्थिति को अभिव्यक्त करना दूसरी बात है। नैतिक वाक्य का मुख्य काम भावनाओं को अभिव्यक्त करना ही होता है, अतः यदि नैतिक वाक्यों का कोई अर्थ है तो वह संवेगात्मक अर्थ ही हो सकता है, वर्णनात्मक अर्थ नहीं।

एयर इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं कि संश्लेषणात्मक कथन सिर्फ तभी सार्थक होते हैं जब वे इन्द्रियानुभव द्वारा सत्यापनीय हों। इसलिए परम्परावादी सिद्धान्त उनकी इस

केन्द्रीय स्थापना के विरुद्ध जाता है। एयर यह दिखला कर इस कठिनाई से बचना चाहते हैं कि नैतिक कथनों का सही विश्लेषण एक तीसरे सिद्धान्त द्वारा दिया जा सकता है जो उनके रेडिकल इन्द्रियानुभववाद के साथ संगत हो।

एयर इस बात को

स्वीकार करते हैं कि नैतिक नैतिक अवधारणाएँ इस अर्थ में अविश्लेष्य होती हैं कि इन निर्णयों की वैधता की जाँच के लिए कोई मापदण्ड नहीं है जिनमें ये अवधारणाएँ मौजूद रहती हैं। स्वयर कहते हैं कि वे इस हद तक "परमवादियों" से सहमत हैं। लेकिन स्वयर के अनुसार "परमवादियों" से अलग वे इसकी व्याख्या कर सकते हैं कि ऐसा क्यों है। इनके अनुसार नैतिक नैतिक अवधारणाएँ इसलिए अविश्लेष्य हैं क्योंकि ये "छद्म अवधारणाएँ (Pseudo concepts) हैं। नैतिक अवधारणाओं को "छद्म अवधारणाएँ" कहने से स्वयर का तात्पर्य यह है कि ये अवधारणाएँ वर्णनात्मक नहीं होती हैं इनके माध्यम से किन्हीं तथ्यों की जानकारी नहीं दी जाती है। स्वयर के विचार में किसी तर्कवाक्य में किसी नैतिक प्रतीक की उपस्थिति से इनके तथ्यात्मक सामग्री में कुछ भी नहीं जुड़ता है। स्वयर के अनुसार, तथ्यों की दृष्टि से "तुमने पैसे चुराए" और "तुमने पैसे चुराकर अनुचित काम किया" इन दोनों कथनों के बीच कोई अंतर नहीं है। इस दूसरे वाक्य में पहले कथन की तुलना में तथ्य-सम्बंधी कोई नयी जानकारी नहीं दी जा रही है। नैतिक शब्द "अनुचित" द्वारा किन्हीं तथ्यों की व्याख्या

नहीं किया जा रहा है, बल्कि मात्र नैतिक नापसंदगी (disapproval) की भावना को व्यक्त किया जा रहा है। यह ऐसी तरह है जैसे "तुमने पैसे चुराए" को एक विशेष अभिमिश्रित लहजे में बोला जा रहा हो, या कुछ विशेष विस्मयादिबोधक चिह्नों के साथ लिखा जा रहा हो। यह लहजा या विस्मयादिबोधक चिह्न वाक्य के शाब्दिक अर्थ में कुछ भी नहीं जोड़ते हैं। वे मात्र यह दिखाते हैं कि इस वाक्य के साथ वक्ता की कुछ भावनाएँ जुड़ी हुई हैं।

एयर के अनुसार, अगर इस दूसरे कथन का सामान्यीकरण कर यह कहा जाए कि "पैसा चुराना अनुचित है" तो इस वाक्य का कोई तथ्यात्मक अर्थ नहीं है, और इसलिए इसके सत्य या असत्य होने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता है। यह ऐसे है जैसे लिखा जा रहा हो "पैसे चुराना !!" जहाँ पर विस्मयादिबोधक चिह्नों के आकार और मोटाई एक उपयुक्त परम्परा द्वारा यह दिखाते हैं कि एक विशेष किस्म की नैतिक नापसंदगी की भावना को व्यक्त किया जा रहा है। यहाँ पर ऐसा भी नहीं कहा जा रहा है कुछ जो सत्य या असत्य हो। अब कोई किसी विशेष किस्म के कर्म को

उचित या अनुचित कहता है तो वह कोई तथ्यात्मक कथन (fact ual statement) नहीं होता है और न ही वह उसकी अपनी मानसिक स्थिति के बारे में कोई कथन होता है; बल्कि वह सिर्फ उसकी नैतिक भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है। एयर के अनुसार जो कुछ 'अनुचित' के बारे में कहा गया है, वह सभी मानक नैतिक प्रतीकों पर लागू होता है। नैतिक शब्द का कार्य पूर्णतः सम्वेगात्मक (emotive) होता है।

लैंग्वेज, टूथ एण्ड लॉजिक की भूमिका में ही एयर यह भी स्वीकार करते हैं कि कई बार नैतिक शब्दों का वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। जैसे - कोई व्यक्ति उपयोगितावादी हो तो किसी काम को 'उचित' कहने में उसका तात्पर्य मात्र यह हो सकता है कि वह इस किस्म का काम है, जिसमें सामान्य सुख में वृद्धि होती है, लेकिन एयर के अनुसार ऐसा हमेशा नहीं होता है। उनके विचार में कई नैतिक निर्णयों में नैतिक शब्दों का इस्तेमाल "विशुद्ध रूप से" मानक तरीके से किया जाता है और सम्वेग का संबंध ऐसे ही नैतिक निर्णयों से है।

एयर ने जिस तरह सम्वेगवाद की व्याख्या की है और जिस तरह उसे आम तौर से समझा गया है इस संदर्भ में दो बातें ध्यान देने योग्य हैं। पहला, यह कि हालांकि एयर नैतिक

नैतिक पदों को संवेगात्मक माना है लेकिन फिर भी इन्होंने स्वीकार किया कि नैतिक पदों का कुछ परिस्थितियों में वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। अपनी किताब के छठे अध्याय में भी एयर ने वर्णनात्मक नैतिक प्रतीक और मानक नैतिक प्रतीक के बीच अंतर किया है। इसी तरह, दस वर्ष बाद लिखी गयी भूमिका में भी एयर यह स्वीकार करते हैं कि कई बार नैतिक शब्दों का वर्णनात्मक इस्तेमाल भी होता है। इसके अलावा एयर ने नैतिक निर्णयों को सापेक्षता से भी जोड़ा है।

अपनी किताब 'लैंग्वेज ट्रुथ एण्ड लॉजिक' के छठे अध्याय में एयर ने जिस तरह से अपनी अपने नैतिक सिद्धान्त को प्रस्तुत किया, उससे ऐसा लगता है कि इनकी नीतिशास्त्र में विशेष रुचि नहीं है बल्कि इनकी दिलचस्पी मात्र नीतिशास्त्र का ऐसा सिद्धांत देने में है जो इनके तार्किक प्रत्यक्षवाद के साथ संगत हो, या जिसके द्वारा इनके तार्किक प्रत्यक्षवाद पर आपत्तियों का निराकरण किया जा सके। जैसे 'परमवाद' को इस आधार पर अस्वीकार किया है कि वह इनके अर्थ के सत्यापनीयता सिद्धांत के विरुद्ध जा रहा है। वैसे, बाद में एयर ने इसे यह कह कर दुरुस्त करने का प्रयत्न किया कि संवेगवाद तार्किक प्रत्यक्षवाद से स्वतंत्र रूप में

एक केंद्र सिद्धांत है। 'लैंग्वेज, ट्रुथ एण्ड लॉजिक' के संवेगवाद में व्यक्त एयर के विचारों में तीन मुख्य बातें हैं:

(1) बुनियादी नैतिक पद वर्णनात्मक नहीं, बल्कि संवेगात्मक होते हैं।

(2) नैतिक निर्णयों के सन्दर्भ में सत्यता और असत्यता का प्रश्न उठाना बेकार है। (अज्ञानवाद)

(3) फिर, नैतिक विधि के बारे में एयर के विचार हैं: अन्तिम विश्लेषण में जब तथ्य सम्बन्धी सारी बातें हो चुकी हों, तो फिर सिर्फ भाषा के संवेगात्मक प्रयोग द्वारा एक-दूसरे को प्रभावित करने का प्रयत्न किया जा सकता है।

संवेगवाद एक किस्म का अज्ञानवाद है।

एयर ने संवेगात्मक अर्थ को महत्त्व देते हुए अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "लैंग्वेज ट्रुथ एंड लॉजिक" में कहा था कि नैतिक भाषा का प्रयोग न तो प्रागनुभाविक क्षेत्र के लिए और न ही अनुभव से ज्ञात की गई वस्तुस्थिति का वर्णन के लिए होता है। इस भाषा का प्रयोग तो केवल संवेगों की अभिव्यक्ति के लिए ही होता है। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि नैतिक भाषा का प्रयोग करनेवाला व्यक्ति इस भाषा का प्रयोग केवल अपने संवेगों को अभिव्यक्त करने के लिए ही नहीं

करता, वरन वह उस भाषा का प्रयोग अपने संवेगों के अनुरूप दूसरों में भी वैसे ही संवेगों को उत्पन्न कराने के लिए भी करता है।

ऑगडेन रिचर्ड्स तथा स्टार ने नैतिक भाषा के इन दोनों ही प्रकार के प्रयोगों को स्वीकार किया है। वस्तुतः सभी संवेगवादी नैतिक भाषा के इन दोनों अर्थात् अभिव्यंजनात्मक तथा उत्प्रेरणात्मक दोनों ही प्रयोगों को स्वीकार करते हैं।